पीएच०डी० शोध–प्रारूप

झारखण्ड निर्माणोत्तर काल का खोरठा गद्य साहित्य : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

स्नातकोत्तर खोरठा विभाग

पीएच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध प्रारूप की रूपरेखा

जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा संकाय

राँची विश्वविद्यालय, राँची

वर्ष–2024

शोध निर्देशिका

कुमारी शशि
विभागाध्यक्ष
स्नातकोत्तर खोरठा विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोधार्थी

ओम प्रकाश महतो
यू०जी०सी० नेट/जे०आर०एफ०
स्नातकोत्तर खोरठा विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

झारखण्ड निर्माणोत्तर काल का खोरठा गद्य साहित्य : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

प्रस्तावना :–

भारत देश का झारखण्ड राज्य जिस पर प्रकृति ने अपने सौंदर्य का खजाना जमकर बरसाया है, घने जंगल, खूबसूरत वादियाँ, जलप्रपात, कलकल बहती नदियाँ वन्य प्राणी खनिज संपदा से भरपूर और संस्कृति के धनी इस राज्य में कई जनजातीय और गैर जनजातीय समुदाय के लोग युगों से एक दूसरे के विकास में सहयोग करते हुए साथ–साथ निवास करते आ रहे है। झारखण्ड राज्य एक जनजातीय बाहुल्य राज्य है, किन्तु राज्य में निवास करने वाले गैर जनजातीय (सदान) समुदाय के लोगों के रंग–रूप, वेश–भूषा, रहन–सहन में कोई खास अन्तर नहीं मिलता है। जीवन के विविध कर्मों में परस्पर सहयोग सहकार से यहाँ एक समन्वित संस्कृति का विकास हुआ है, यह संस्कृति समतावाद, श्रमशीलता और उच्चतर सामाजिक व मानवीय मूल्यों की पृष्ठ पोषक है। सामाजिक, सांस्कृतिक एवं भाषाई क्रियाकलापों में जनजातीय एवं गैर जनजातीय समुदाय के लोग एक सूत्र में पिरोए हुए नजर आते है।

विशिष्ट भौगोलिक, सांस्कृतिक अस्मिता से युक्त इस झारखण्ड राज्य में पांरपरिक रूप से निवास करने वाले जनजातीयों व गैर जनजातीय (सदान) समुदाय के विचार विनिमय और यहाँ कि संस्कृति को मुखरित करने के लिए

साधन के रूप में सरकार से मान्यता प्राप्त 9 भाषाएँ प्रचलित है, जिनमें संताली, मुण्डारी, हो, खड़िया और कुँडुख़ जनजातीय भाषा के अन्तर्गत आते है। इन्हीं 9 भाषाओं में से एक खोरठा है, जो सरकार के द्वारा मान्यता प्राप्त 4 क्षेत्रीय भाषाओं के अन्तर्गत आता है। इस भाषा को झारखण्ड का द्वितीय राज भाषा का दर्जा भी प्राप्त है।

खोरठा भाषा झारखण्ड के 16 जिलों में (रामगढ़, चतरा, हजारीबाग, कोडरमा, गिरिडीह, बोकारो, धनबाद, देवघर, पाकुड़, गोड्डा, साहेबगंज, जामताड़ा, दुमका, गढ़वा, लातेहार एवं पलामू) बोली जाती है। कुछ अनुसंधान के अनुसार इसके उपक्षेत्रों में असम, मॉरीशस, अंडमान निकोबार है, जहाँ खोरठा भाषी विस्थापित निर्वासित एवं प्रवासित होकर जीवन–यापन कर रहें है। भाषागत रूप से इसका सीमांकन इस प्रकार है–

उत्तर में मगही भाषी, अगिंका भाषा का क्षेत्र उत्तर–पूरब और पूरब में बंगला का क्षेत्र, पूरब–दक्षिण में कुरमाली का क्षेत्र, दक्षिण में कुरमाली–नागपुरी एवं पंचपरगनियाँ का क्षेत्र और दक्षिण–पश्चिम में नागपुरी का क्षेत्र तथा परवर्ती दक्षिण–पश्चिम में वर्त्तमान पलामू प्रमण्डल का क्षेत्र पड़ता है जहाँ खोरठा, नागपुरी, मगही एवं भोजपुरी का मिश्रित रूप प्रचलित है।

खोरठा मुख्य रूप से झारखण्ड के सदानों (गैर जनजातीय) की मातृभाषा है, किन्तु झारखण्ड के कई क्षेत्रों में कई जनजातीय समुदायों का भी मातृभाषा खोरठा ही है। यह भाषा जनजातीय समुदाय एवं सदानों (गैर जनजातीय) के

बीच संपर्क भाषा के रूप में काम करती है। खोरठा झारखण्ड की एक स्वतंत्र एवं समृद्ध भाषा है, साहित्य के विविध विधाओं, गद्य एवं पद्य के अन्तर्गत समाहित कहानी, कविता, गीत, निबंध, नाटक, संस्मरण, उपन्यास, लघु कथा, शब्द चित्र आदि खोरठा में लिखे गए है। झुमटा, खेमटा, घेरा, टुसु और करम पर्व के गीतों में खोरठा का लोक साहित्य सुरक्षित है।

खोरठा का लोक साहित्य अत्यंत समृद्ध है, शब्द भण्डार भरा हुआ है और यह झारखण्ड के विशाल क्षेत्र की भाषा है।

इस प्रकार हम देखते है कि क्षेत्र में खोरठा भाषा युगों–युगों से चली आ रही अतः सलिला लोक साहित्य की अजस्र धारा प्रवाहित होती आ रही है।

यों तो खोरठा के गद्य साहित्य का विगत सदी प्रगतिशील विचारों को ही प्रस्तुत करता आया है, पर झारखण्ड निर्माण के उपरांत नये राज्य की बदली परिस्थितियों और लेखन प्रकाशन में आयी गति में प्रगतिशीलता से ओत–प्रोत साहित्य अधिक है। मैं अपने इस अध्ययन में इस कालावधि सन् 2000 से अद्यतन समय तक के खोरठा गद्य साहित्य के तत्वों का पड़ताल की कोशिश करूँगा।

शोध कार्य की प्रेरणा एवं औचित्य :

झारखण्ड मेरी जन्म भूमि एवं कर्मभूमि है और मातृभाषा खोरठा होने के कारण बचपन से ही इस भाषा के प्रति लगाव रहा है। मैंने कई खोरठा रचनाकारों की रचनाओं को पढ़ा। पढ़कर काफी प्रभावित हुआ और मुझे लगा कि अगर मुझे शोध करने का अवसर मिला तो मैं झारखण्ड निर्माणोत्तर काल का खोरठा गद्य साहित्य से संबंधित सभी रचनाओं को एक जगह संग्रहीत करने का कोशिश करूँगा, जिससे आनेवाले पीढ़ी को इस शोध कार्य के द्वारा कुछ जानकारियाँ दे सकूँ। फलतः खोरठा रचनाकारों की गद्य साहित्य की खोज के सन्दर्भ से संबंधित रचनाओं को समाज के सामने प्रस्तुत करना ही मेरे लिए बहुत बड़ी बात है, इसलिए मैंने इसी विषय को अपना शोध चुना। मेरे गुरूजनों (परम आदरणीय कुमारी शशि, डॉ० अर्चना कुमारी, दिनेश कुमार ''दिनमणि'', डॉ० निरंजन कुमार, डॉ० नकुल कुमार) एवं मित्रो ने भी इस शोध कार्य के लिए मुझे प्रेरित किया।

किसी भी शोध कार्य का महत्त्व तब तक नहीं होता जब तक उसकी उपयोगिता समाज व देश के लिए न हो।

शोध प्रबंध का उद्देश्य :

किसी शोध कार्य प्रारंभ करने के पूर्व शोध से संबंधित उद्देश्य निर्धारित की जाती है। इस शोध प्रारूप का निम्नांकित उद्देश्य है–

1. खोरठा भाषा एवं इससे जुड़े साहित्य का अध्ययन करना।
2. खोरठा गद्य साहित्य का अध्ययन करना।
3. खोरठा कहानी साहित्य को प्रतिबिंबित करना।
4. खोरठा उपन्यास साहित्य का गहन अध्ययन करना।
5. खोरठा नाट्य साहित्य को दर्शाना
6. खोरठा निबंध साहित्य के स्वरुपों का अध्ययन करना।
7. खोरठा गद्य साहित्य की अन्य गौण विधाओं का परिचय एवं विवेचन करना।

शोध का महत्व :

1. झारखण्ड निर्माण के बाद झारखण्ड की आर्थिक, समाजिक, राजनीतिक सांस्कृतिक स्थितियों का साहित्य में पड़े प्रभाव को समझा जा सकेगा।
2. इस अध्ययन से खोरठा साहित्य के अध्येताओं, विद्यार्थियों के लिए अपेक्षित अध्ययन सामग्री प्राप्त हो सकेगी।
3. झारखण्ड निर्माण के बाद खोरठा साहित्यकारों की विचार–दृष्टि और विधागत अभिरूचि को समझा जा सकेगा।
4. झारखण्ड निर्माण के बाद गद्य साहित्य के विकास और उसकी दशा–दिशा को जानने की विश्लेषित सामग्री प्राप्त हो सकेगी।
5. झारखण्ड निर्माण के बाद खोरठा गद्य साहित्य की चुनौतियाँ और संभावनाओं को जाना जा सकेगा।
6. किसी भाषा के विकास में गद्य साहित्य के योगदान के संदर्भ में झारखण्ड निर्माण के बाद के गद्य साहित्य की भूमिका को जानने की सामग्री प्राप्त होगी।

शोध का समाज पर प्रभाव :

1. इस शोध प्रबंध के प्रकाश में आने से समस्त खोरठा भाषा–भाषियों एवं समाज में खोरठा साहित्यकारों के प्रति सम्मान बढ़ेगा और जागृति की लहर लाएगी।
2. निज भाषा प्रेम एवं अपनी संस्कृति के प्रति लोगों का रूझान बढ़ेगा।
3. सामाजिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक एव ंसाहित्यिक कार्य के प्रति समझदारी एवं निष्ठा का विकास होगा।
4. शोध पत्र के प्रकाश में आने पर झारखण्ड ही नहीं बल्कि पूरे राष्ट्र के क्षेत्रीय भाषाओं, कला–संस्कृति के यशस्वी रचनाओं के योगदानों को प्रकाश में लाने की प्रेरणा मिलेगी।

शोध विधि :

प्रस्तावित शोध प्रबंध को पूर्ण करने के लिए निम्नांकित शोध विधियों का अनुसरण किया जायेगा–

- विश्लेषणात्मक विधि
- वर्णनात्मक विधि
- साक्षात्कार विधि
- अवलोकन विधि
- अनुसूची विधि

शोध सामग्री :

- दूरस्थ लोगों से पत्राचार
- कंप्यूटर, लैपटॉप, प्रिंटर, मोबाइल
- इन्टरनेट
- कैमरा
- टेपरिकार्डर
- टंकण मशीन
- समाचार पत्र
- पत्र–पत्रिकाओं की सूची
- पेन ड्राइव आदि।

पीएच0 डी0 शोध प्रारुप की प्रस्तावित रुपरेखा

विषय–सूची

प्रस्तावना :–

- शोध की परिकल्पना
- शोध की प्रेरणा एवं औचित्य
- शोध का उद्‌देश्य
- शोध का महत्व
- शोध का समाज पर प्रभाव
- शोध प्रविधि
- सामग्री संकलन के लिए उपयोग में आने वाले विभिन्न उपकरण

प्रथम अध्याय : झारखण्ड निर्माणोत्तर काल के खोरठा गद्य साहित्य का सामान्य परिचय

(क) गद्य साहित्य का परिचय

(ख) गद्य साहित्य की स्थिति एवं विशेषता

(ग) गद्य साहित्य की लेखन परंपरा

द्वितीय अध्याय : झारखण्ड निर्माणोत्तर काल का खोरठा कहानी साहित्य

(क) कहानी साहित्य का परिचय

(ख) कहानी साहित्य की परंपरा

(ग) कहानी साहित्य की प्रमुख पुस्तकें

तृतीय अध्याय : झारखण्ड निर्माणोत्तर काल का खोरठा उपन्यास साहित्य

(क) उपन्यास साहित्य का परिचय

(ख) उपन्यास साहित्य की परंपरा

(ख) उपन्यास साहित्य की प्रमुख पुस्तकें

चतुर्थ अध्याय : झारखण्ड निर्माणोत्तर काल का खोरठा नाट्य साहित्य

(क) नाट्य साहित्य का परिचय

(ख) नाट्य साहित्य की परंपरा

(ग) नाट्य साहित्य की प्रमुख पुस्तकें

पंचम अध्याय : झारखण्ड निर्माणोत्तर काल का खोरठा निबंध साहित्य

(क) निबंध साहित्य का परिचय

(ख) निबंध साहित्य की परंपरा

(ग) निबंध साहित्य की प्रमुख पुस्तकें

षष्टम अध्याय : झारखण्ड निर्माणोत्तर काल का खोरठा गद्य साहित्य की अन्य गौण विधाएँ

(क) जीवनी साहित्य

(ख) संस्मरण

(ग) यात्रा–वृत्तांत

(घ) व्यंग्य साहित्य

(ड़) लघु कथा साहित्य

सप्तम् अध्याय : पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित झारखण्ड निर्माणोत्तर काल का खोरठा गद्य की रचनाएँ

(ख) स्थानीय पत्र–पत्रिकाएँ

(ख) राजकीय पत्र–पत्रिकाएँ

(ग) राष्ट्रीय पत्र–पत्रिकाएँ

शोध निष्कर्ष :–

परिशिष्ट
आधार ग्रंथो की सूची
संदर्भ ग्रंथो की सूची
समाचार पत्रों की सूची
साक्षात्कार सूची/चित्रावली

नोट : शोध प्रारूप में आवश्यकतानुसार किंचित परिवर्तन समयानुसार किया जा सकता है।

शोध निर्देशिका

कुमारी शशि
विभागाध्यक्ष
स्नातकोत्तर खोरठा विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोधार्थी

ओम प्रकाश महतो
यू.जी.सी. नेट/ जे.आर.एफ
स्नातकोत्तर खोरठा विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

आधार ग्रंथों की सूची

1. कुमार, डॉ० अरबिन्द : धुँगा, बालीडीह खोरठा कमिटी, बालीडीह बोकारो 2007
2. कुमार, डॉ० बिनोद : धोवइयाक धमक, झारखण्ड झरोखा, रातू रोड़ रांची 2022
3. गदर, इमतियाज : सुरमनी सानी प्रकाशन गोमो, धनबाद2010
4. गोस्वामी जनार्दन व्यथित : खटरस, बालीडीह खोरठा कमिटि बालीडीह बोकारो, 2004
5. गोस्वामी, महेन्द्रनाथ सुधाकर : जोंक, झारखण्ड झरोखा, रातू रोड़ रांची, 2015
6. दसौंधी, विश्वनाथ राज : अजगर, बालीडीह खोरठा कमिटी, बालीडीह, बोकारो, 2004
7. दसौंधी, विश्वनाथ राज : भगजोगनी, बालीडीह खोरठा कमिटी, बालीडीह, बोकारो 2004
8. दास, पी0 सी0 : नचनी काकी, बालीडीह खोरठा कमिटि, बालीडीह बोकारो, 2013
9. प्रबुद्ध, महेन्द्र : तीन काठ धान, उषा पब्लिशिंग हाउस, धनबाद, 2007
10. प्रबुद्ध, महेन्द्र : झुमरी तिलैयाक चंपा, उषा पब्लिशिंग हाउस, धनबाद, 2011
11. प्रबुद्ध, महेन्द्र : बुद्धम शरणम गच्छामि, उषा पब्लिशिंग हाउस, धनबाद, 2016
12. महतो, पंचम : फरीछ डहर, बालीडीह खोरठा कमिटि, बालीडीह बोकारो, 2001
13. महतो, चितरंजन चित्रा : छोंहइर, खोरठा भाषा साहित्य संस्कृति अकादमी, रामगढ़, 2007
14. राम, डॉ0 डी0सी0 : ढरकर लोर, खोरठा भाषा साहित्य संस्कृति अकादमी, रामगढ़, 2008

संदर्भ ग्रंथों की सूची

1. ओहदार, डॉ0 बी.एन. : खोरठा भाषा एवं साहित्य (उद्भव एवं विकास), मार्गदर्शन पब्लिकेशन, अपर बाजार, राँची, 2007
2. कुमारी, डॉ0 अर्चना : खोरठा शिष्ट साहित्यः एक अध्ययन, प्यारा केरकेट्टा फाउण्डेशन, राँची, 2015
3. गदर, इमतियाज : पारसनाथ, झारखंड झरोखा, रातू रोड, राँची, 2016
4. गदर, इमतियाज : अलीपुर, सानी प्रकाशन, गोमो, धनबाद, 2013
5. गदर, इमतियाज : बेचारा मास्टर, सानी प्रकाशन गोमो, धनबाद 2014
6. गोस्वामी, जनार्दन व्यथित : उजडल खोंधा, बालीडीह खोरठा कमिटि, बालीडीह, बोकारो, 2007
7. गोस्वामी, मनपूरन : परासचित, बालीडीह खोरठा कमिटी, बालीडीह, बोकारो, 2006
8. तिवारी, डॉ. उमेश नंद : आधुनिक नागपुरी साहित्य, झारखण्ड झरोखा, रातू रोड़, राँची, 2014
9. पानुरी, श्रीनिवास : चाभी काठी, बालीडीह खोरठा कमिटी, बालीडीह बोकारो, 2006
10. प्रबुद्ध, महेन्द्र : चंदूलाल चौकीदार, उषा पब्लिशिंग हाउस, धनबाद, 2008
11. महतो, पंचम : मनचरयाँ, बालीडीह खोरठा कमिटी, बालीडीह, बोकारो, 2008

पत्र–पत्रिकाओं की सूची :–

1. ओहदार, डॉ० बी०एन० : करील, ओरमांझी, राँची, 2009
2. कुशवाहा, फाल्गुनी मरीक : सहिदान, गिरिडीह, 2002
3. गोस्वामी, अनिल कुमार : सहिया, बोकारो, 2002
4. दांगी, डॉ० आनन्द कुमार : खोरठा टाइम्स, चतरा, 2021
5. प्रबुद्ध, महेन्द्र : परासफुल, धनबाद, 2009
6. महतो, संदीप कुमार : खोरठा दरपन, बोकारो, 2003

समाचार–पत्रों की सूची :–

1. आज
2. आवाज (झारखंड टाइम्स)
3. अमृतवर्षा, बोकारो
4. छोटानागपुर रश्मि, बोकारो
5. झार न्यूज खोरठा
6. झारखंडी नगाड़ा, चास
7. दैनिक भास्कर, राँची
8. दैनिक जागरण, राँची
9. प्रभात खबर, राँची
10. हिन्दुस्तान, राँची